Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

भारतीय सामाजिक परम्पराओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

डॉ. मीनाक्षी मीना

सहायक आचार्य समाजशास्त्र राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

शोध सारांश

आधुनिकीकरण एक निरंतर सामाजिक प्रक्रिया है, जो परंपरागत समाज को बदलकर उसे अधिक प्रगतिशील, वैज्ञानिक और तर्कसंगत बनाती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सामाजिक परंपराएँकृजैसे परिवार, विवाह, जाति व्यवस्था, धर्म और संस्कृतिकृआधुनिकीकरण से गहराई से प्रभावित हुई हैं। यह शोध–पत्र इन परिवर्तनों के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द : विविधता, आधुनिकता, परम्पराएँ, वैश्वीकरण, प्रगति, समग्रता, जजमानी, मूल्य, विकास, उच्च आर्थिक वृद्धि दर

प्रस्तावना

परम्पराएँ सम्पूर्ण समाज की होती है। ये समूह की आदतें हैं। किसी व्यक्ति विशेष की कोई परम्परा नहीं होती है। परम्पराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित की जाती है। समूह एवं समाज में आदतें बराबर चलती रहती है, इसलिए परम्पराएँ भी चलती रहती है। पुरानी परम्पराएँ नई परम्पराओं को स्थान देती है। यह सच है कि भारतीय समाज में आज जो भी आधुनिकता है, उसका बहुत बड़ा निर्धारण यहाँ की परम्पराओं ने किया है। परम्पराओं के साथ में स्थानीय, आँचलिक और विशद् इतिहास भी जुड़ा होता है। यूरोप और अमेरिका की आधुनिकता का निर्माण ढेर सारी क्रांतियों ने किया है। वहाँ राजनीतिक क्रांतियाँ हुई, वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांतियों हुई और दो बड़े विश्व युद्ध हए। वियतनाम युद्ध ने अमेरिका की कमर कमजोर कर दी। ये सब परम्पराएँ थी और इन्होंने आधुनिकता के भविष्य को तय कर दिया। हमारे देश में परम्पराएँ अलग थी। यहाँ पहले देशी राजा, महाराजा थे, इसके बाद विदेशी आक्रमण हुए और फिर उपनिवेशवाद के रूप में साम्राज्यवाद आया। इसके बाद ब्रिटिस ने शासन किया। इन सब राजनीति और औद्योगिक कारकों ने जिस आधुनिकता को जन्म दिया, वह यहाँ की विशिष्टता के अनुरूप है। यहाँ का सामंतवाद यूरोप के सामंतवाद से भिन्न था। यहाँ का पूंजीवाद विदेशी पूंजीवाद से भिन्न है। इस प्रकार भारतीय समाज की अपनी परम्पराएँ अन्य देशों की तुलना में भिन्न प्रकार की है। भारतीय परम्पराओं में आधुनिकीकरण किस प्रकार हो रहा है, यह प्रश्न काफी महत्त्वपूर्ण है। हमारा तर्क है कि भारतीय समाज में पर्याप्त विविधता है। इसका मतलब हुआ कि यहाँ पर्याप्त परम्पराएँ हैं और इससे आगे, हमारी विविधताओं में एक निश्चित एकता है और इसी कारण यह समाज में सभ्यता का समाज है। इसका एक और तर्क है कि इस विविधता में आधुनिकता का यहाँ विकास हुआ है। यह आधुनिकता भी अपनी एक विशेष पहचान रखती है। आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप समाज ने समय एवं आवश्यकतानुसार अपनी परम्पराओं में आवश्यक बदलाव किया है।

उद्देश्य

1. आधुनिकता की व्याख्या परम्पराओं और इतिहास के संदर्भ में किस प्रकार हुई है, का अध्ययन करना।
2. भारतीय समाज में विविधताओं की बहुलता के उपरान्त आधुनिकीकरण ने परम्पराओं में विशिष्टता उत्पन्न की है का अध्ययन करना।
3. आधुनिकीकरण से परम्पराओं ने अपना नया रूप धारण किया का अध्ययन करना।

4. आधुनिकीकरण से समाज में वैश्वीकरण उत्पन्न हुआ है इसका अध्ययन करना है।
5. आधुनिकीकरण से समाज में नई जजमानी व्यवस्था को किस प्रकार बढ़ावा मिला इसका अध्ययनक करना है।
6. समाज की उच्च आर्थिक वृद्धि दर और परम्पराओं को मालुम करना।
7. परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन का अध्ययन करना।
8. आधुनिकरण से सामाजिक विकास में गति प्राप्त हुई है, को मालुम करना।

प्रस्तावना

आधुनिकता और पम्परा के मुठभेड़ की यह प्रक्रिया कोई भारतीय समाज में ही हो, ऐसा नहीं है। स्वयं यूरोप और अमेरिका की ऐसी मुठभेड़ 16वीं व 17वीं शदाब्दी में करनी पड़ी थी। वहां चर्च और राज्य पृथक नहीं थे। राज्य का धर्म ईसाई धर्म था और राजतंत्र सम्पूर्ण यूरोप में व्यापक व्यवस्था थी। सामंतवाद का प्रभावी मुहावरा था। इस तरह की परम्परा, निश्चित है, धर्म निरपेक्ष नहीं था। उसमें कहीं बुद्धिसंगतता नहीं थी। इसी में वहां प्रजातंत्र, पूंजीवाद और उद्योगवाद आये। हमारे समाज में जब कभी आधुनिकता की चर्चा समाजशास्त्री करते हैं तो इसकी शुरूआत ब्रिटिस काल से करते हैं। उनके लिए मशीनीकरण, रेलगाड़ी, छपाई की मशीन आदि आधुनिकता के प्रमाण हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय समाजशास्त्रीयों ने परम्परा और आधुनिकीकरण की मुठभेड़ का कोई गंभीर अध्ययन किया हो, ऐसा नहीं है। अधिकांश समाजशास्त्री जाति, गाँव और नातेदारी के अध्ययन में उलझे रहे। आधुनिकता को उन्होंने कभी मुद्दा नहीं समझा। परम्परा और आधुनिकता पर बहुत कम समाजशास्त्रीयों ने काम किया है। ये समाजशास्त्री डी. पी. मुकर्जी, एम.एन.श्रीनिवास और योगेन्द्र सिंह हैं। योगेन्द्र सिंह ने अपनी कृति मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन में अपने विचार रखे हैं। आंशिक रूप से दीपांकर गुप्ता ने भी इसकी चर्चा की है।

परम्परा और आधुनिकता

दोनों ही द्विध्रुवी अवधारणाएँ हैं। सन् 1950 के दशक के बाद इन अवधारणों पर हमारे समाज में बड़ी चर्चा हुई। देश के बाहर भी विदेशों में भी जब आधुनिकीकरण आया तब वहां भी इन दोनों परस्पर विरोधी अवधारणाओं पर काफी चर्चा हुई। योगेन्द्र सिंह कहते हैं कि भारत में परम्परा और आधुनिकता को ब्रिटिस उपनिवेशवाद के संदर्भ में देखना चाहिये। अंग्रेजी हुकूमत यह चाहती है थी कि आम भारतीय जनता में कम से कम सतही रूप से तो यही स्थापित करना चाहिएं की यहां परम्पराएँ समाज की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। ये कड़ियां समाज को एक सूत्र में बांधे रखती है। परम्पराओं की प्रति उपनिवेशवाद सरकार का ऐसा उदार दृष्टिकोण जहां एक ओर उन्हें लोकप्रिय बनाता था, वहीं दूसरी ओर परम्पराओं को सुदृढ़ बनाता था। प्राच्यवादी समाज वैज्ञानिकों ने भी भारतीय क्लासिकल साहित्य पर बड़ा जोर दिया। उनका पूरा ध्यान प्राचीन साहित्य पर अटका रहा। ब्रिटिस मानवशास्त्री और भारतीय समाजशास्त्री जिनमें इतिहासकार भी सम्मिलित हैं, कभी भी इस काल की हमने परम्पराओं को हमेशा आधुनिकता के विरोध में देखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब हमने निर्णय लिया कि हम भारत को एक आधुनिक राष्ट्र बनायेगें, तब पहली बार परम्परा और आधुनिकता का विवाद स्पष्ट रूप से हमारे सामने आया। इस विवाद की शुरूआत डी.पी. मुकर्जी ने की। **डी.पी मुकर्जी** के अनुसार सामान्य धारणा को लेकर चलते हैं कि परम्परा एक सामाजिक व्यवहार है। यह व्यक्तियों के व्यवहार को मानक और मूल्य प्रदान करता है। इसका तात्पर्य है कि अतीत के काल्पनिक या वास्तविक व्यवहार को निरन्तरता देना होता है। इसके अन्तर्गत धर्म विधियां और प्रतिकात्मक व्यवहार सम्मिलित है। **डी.एन. मजूमदार** के अनुसार हमें अतीत (परम्पराओं) को वर्तमान के संदर्भ में समझना चाहिये, और वर्तमान की अतीत के संदर्भ में। कभी स्वर्ण युग नहीं था, और न भविष्य में यह कभी होगा। जीवन तो सामंजस की एक प्रक्रिया है और यह बराबर प्रकट या उघड़ती रहती है। वे लोग जो इस सामंजस को नहीं पाते, समाज उन्हें फेंक देता है और जो नई व्यवस्था के साथ अपना तालमेल, जोड़ बैठा लेते हैं, आगे निकल जाते हैं।

मजूमदार परम्परा और आधुनिकता को जोड़ते हैं। परम्पराएँ अतीत की है। इनकी समाज में वैधता है लेकिन ये परम्पराएँ जड़ नहीं है। इन्हें आधुनिकता के साथ समझौता करना पड़ता है, तभी ये जीवित रह सकती है।

एम.एन.श्रीनिवास भारतीय समाजशास्त्र में एक मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं। ये पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय समाज और सभ्यता को एक छोटी दुनिया के रूप में समझने का प्रयास किया। श्रीनिवास के अनेकों अध्ययन के उपरान्त परम्पराओं को जाति में देखते हैं। **कास्ट इन मॉडर्न इण्डिया एण्ड अदर एसेज** में वे परम्पराओं का उल्लेख केवल नाम के कारण करते हैं। क्योंकि यहां उनकी समस्या पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की व्याख्या करना होता है। **जी.एस.घुरिये** भारतीय समाज को परम्पराओं से भरा हुआ एक ऐसा केपस्यूल समझते हैं जिसके माध्यम से समाज के सम्पूर्ण क्षेत्रों का विवेचना किया जा सकता है। घुरिये के लिए हिन्दू परम्पराएँ चाहे वे जातियों की हों, धर्म की, साधुओं की या जनजातीयों की, सभी का मापदण्ड हिन्दू परम्पराएँ ही हैं। जिन समाजों हिन्दू परम्परा का फीता सही नहीं बैठता, वे समूह हाशिये के समूह हैं, अर्थात देश की मुख्या धारा से अलग–थलग हैं। **ए.आर. देसाई** के अनुसार भारतीय समाज में कुछ परम्पराएँ रही है।

दीपांकर गुप्ता ने **मिस्टेकन मॉडर्निटी** में आधुनिकता का सैद्धान्तिक निर्वचन किया है। लेकिन उनका उपागम भी योगेन्द्र सिंह की तरह आनुभाविक नहीं है। प्रश्न यह उठता है कि भारतीय परम्पराओं का किस प्रकार आधुनिकीकरण हो रहा है। इसका अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता हैं–

1. **वैश्वीकरण –** आज हमारे समाज की अर्थव्यवस्था, राजनीति, व्यापार और संचार में वैश्वीकरण जड़ जमाएं हुए हैं। अब अधिक से अधिक लोग इस सोच के हैं कि हम ''एक दुनिया'' में रह रहे हैं। अब व्यक्ति तथा समूह अन्तर्निभरता की ऐसा जाल में है जिससे कोई बच नहीं सकता। वैश्वीकरण वस्तुतः विभिन्न लोगों, क्षेत्रों और देशों की अन्तर्निभरता है जिसकी व्यापकता सारी दुनिया में हैं। इस वैश्वीकरण ने आधुनिकता की वैचारिक, तकनीकी तंत्र, पूंजीवाद और प्रजातांत्रिक व्यवस्था को अधिकतम तीव्रता दी है। इसी कारण वैश्वीकरण को आधुनिकता का एक बहुत बड़ा कारण समझाा जाने लगा है। **भारत के लोग प्रोजेक्ट** भी इसी थीसिस को ताकतवर शब्दों में रखता है कि पिछले कुछ दशकों में यहां क्षेत्रीयता और स्थानीयता सुदृढ़ हो गये हैं। इन्हें राष्ट्र–राज्य के साथ जोड़ने में वैश्वीकरण एक बहुत बड़ी कड़ी है। हमारी स्थानीय, आंचलिक और क्षेत्रीय संस्कृतियां बहुत व्यापक है और इन्हें वैश्वीकरण के माध्यम से ही जोड़ा जा सकता है। भारत में आधुनिकता आज जिस दौर में है, इसमें वैश्वीकरण का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है।
2. **उच्च उपभोग –** उपभोग के जो प्रतिमान हमारे देश के लोगों में उभरते दिखाई देते हैं, वे स्पष्ट रूप से यह बताते हैं जहां एक ओर हम अपनी परम्पराओं में पूरा लचीलापन लाने को तैयार है, वहीं हम बड़ी उदारता से आधुनिक उपभोग की वस्तुओं को अपना रहे हैं। उपभोग करने का लालच हममें इतना बेकाबू है कि हम हर किस्म की वस्तु को अपनाने के लिए तैयार है। ऐसा समझा जाने लगा है और विशेषकर मध्यम वर्गों कि जो जितना अधिक उपभोग करता है, वह उतना ही अधिक अभिजन या समृद्ध होगा। इस प्रकार इस उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी परम्पराओं के साथ तालमेल बैठाकर समाज में उच्च उपभोग संस्कृति एवं परम्परा दोनों ही मौजूद है।
3. **उच्च वृद्धि दर –** आधुनिकता का एक लक्षण उच्च वृद्धि दर भी है। कुछ अर्थशास्त्री मानते हैं कि समाज में जब वृद्धि दर बढ़ जाती है तब अपने आप उसमें विकास आ जाता है। औद्योगीकरण तथा शहरीकरण ने पूंजीवाद के विकास में वृद्धि की है। इससे आम आदमी की आमदनी में बढ़ावा हुआ है। सूत्र बहुत सामान्य है : अधिक आय तो अधिक आधुनिकता। शहरों में गगनचुम्बी मकान, आलीशान सभागृह आदि उच्च आय के द्योतक है। दीपांकर गुप्ता बढ़ी हुई वृद्धि दर को भी आधुनिकता की पहचान नहीं मानते। देखा जाये तो प्रत्येक देश या समाज का आधुनिकता का अपना एक विशेष रास्ता होता है। आधुनिकता एक नहीं अनेक हैं। दृष्टान्त के लिए जापान को लीजिये वहां अत्यधिक वृद्धि दर है। इस देश का उद्योग और इसका उत्पादन अमेरिका को चुनौति देता है। इसका तकनीकी तंत्र दुनिया में सर्वोच्च है। लेकिन सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से जापान स्त्रियों की स्वतंत्रता तथा समानता में बहुत पीछे है। अभी भी तकनीकी तंत्र की दृष्टि से यह उच्च राष्ट्र और सामाजिक या सांस्कृतिक दृष्टि से परम्परागत तथा दकियानूस है।
4. **समग्रता या होलिजम –** यदि आधुनिकता किसी समाज में है तो वह समग्र समाज में होना चाहिए। ऐसा नहीं हो की कुछ लोगों को अधिकार सम्पूर्ण सम्पत्ति पर हो और शेष लोग हाशिये पर आ जाये। इस बात से सभी

आधुनिकतावादी सहमत है, कि समाज में आधुनिकता को पूरी तरह से व्यापक होना चाहिए। जब आधुनिकतावादी इस समग्रता को भारतीय समाज पर लागू करते हैं तब लगता है कि संविधान द्वारा प्रदत्त सभी अधिकार लोगों में समान रूप से पाये जाते हैं। मत देने का अधिकार सभी को है। कानून के सामने सब समान है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों को सम्पूर्ण देश में सुरक्षाएं प्राप्त है। व्यापार धंधे करने की सभी को सुविधाएं हैं। ये सब कारक बताते हैं कि भारतीय समाज में प्रजातांत्रिक अधिकार सभी नागरिकों को मिले हुए हैं। अतः आधुनिकता की समग्रता हमारे समाज में एक सर्वमान्य लक्षण है।

5. **नई जजमानी व्यवस्था** – परम्परागत भारत में जजमानी व्यवस्था थी। इस व्यवस्था में राजा या जागीरदार अपने परम्परागत भारत में जजमानों को आश्रय देते थे, उन्हें संरक्षण देते थे। यह परम्परागत अर्थव्यवस्था बंधी हुई व्यवस्था थी। इस व्यवस्था का स्थान मुद्रा व्यवस्था अर्थात् खुली व्यवस्था ने लिया। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस परम्परा ने अपना फैलाव आर्थिक क्षेत्रों के बाहर राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में कर लिया। योगेन्द्र सिंह कहते हैं कि हमारे देश में परम्पराओं ने आधुनिकता के साथ अनुकूलन कर लिया है और यहां परम्पराओं का आधुनिकीकरण हो गया है। उनकी यह थीसिस कुछ अर्थों में सही है। लेकिन कहीं–कहीं आधुनिकीकरण ने परम्पराओं को एक भोंडा स्वरूप भी दिया है। पुरानी परम्परा ने आज आश्रय देने की एक नई राजनीतिक परम्परा पैदा की है। यह परम्परा आधुनिकता को ताक में रख देती है। यहां पर आकर हम कहते हैं कि समाज का इतिहास उसकी दशाएं और परम्पराएँ आधुनिकता का एक रास्ता चुन लेती है।
6. **मूल्यों का विकल्प – पारसंस** समाजशास्त्र के एक मूर्धन्य सिद्धान्तवेत्ता रहे हैं। उन्होंने पेटर्न वेरियबल का एक आदर्श प्रारूप दिया है। इसके अनुसार आधुनिकता का सीधा सम्बन्ध वैचारिकता के साथ है। इसका अर्थ हुआ : आधुनिकता और परम्परा में मूल्यों के आधार पर अन्तर किया जा सकता है। किसी भी समाज के मूल्यों को अपनाने में व्यक्ति या समुदाय दुविधा या असमंजस में पड़ जाता है। ये मूल्य परस्पर विरोधी होते हैं। इन्हें ध्रुवीय द्विभागीकरण कहा जाता है। वे समाज जो आधुनिक होते हैं, उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे भावात्मक तटस्थता, विशिष्टता, सार्वभौमिकता, उपलब्धि और सामूहिकता के मूल्यों को अपने व्यवहार में लायेंगे। वास्तविकता यह है कि जब कभी आधुनिकता के मूल्यों को क्रियान्वित किया जाता है तो परम्पराएँ विकल्पों के अपनाने में आड़े आ जाती है। कहीं जाति व्यवस्था रास्ते में आती है, कहीं धर्म और कहीं भाषा। इस सबका परिणाम यह होता है कि आधुनिकता के मूल्य कुछ तथाकथित आधुनिक वर्गों या जातियों तक सीमित रह जाते हैं।
7. **सामाजिक आन्दोलन और आधुनिकता – आईजेनस्टेट** ने एक स्थान पर कहा है कि आधुनिकता का बहुत बड़ा लक्षण सामाजिक आन्दोलन को जन्म देना है। हमारे यहां उपनिवेशकाल में, अंग्रेज हुकूमत ने स्थानीय लोगों का शोषण किया। साम्राज्यवाद ने लोगों की कमर तोड़ दी। यह सब हमने कहा है, सहा है, और लिखा है। लेकिन यह भी सही है कि उपनिवेशवाद ने हमें उदारवादी और प्रजातांत्रिक मूल्यों को भी दिया है। हमारी आजादी की लड़ाई में इन मूल्यों ने हमें अत्यधिक प्रोत्साहित किया है। वास्तव में इस युग में हमारे देश में कई समाज सुधारक कार्य हुए। यह एक ऐसी क्रांति थी जब हमने अस्पृश्यता का विरोध किया, पर्दे में रहने वाली महिलाओं को आजादी की लड़ाई का भागीदार बना दिया। स्वदेशी उत्पादन को शीर्ष स्थान दिया और गाँवों में रचनात्मक काम की एक नई परम्परा स्थापित कर दी। इस संदर्भ में कहा जाना चाहिए कि आधुनिकता का एक अनिवार्य लक्षण आन्दोलन है और कभी–कभी ये आन्दोलन क्रांति का रूप भी ले सकते हैं। हम खेत का उत्पादन बढाने के लिए उच्च पैदावार करने वाली किस्मों को काम में लिया–यानी कृषि का आधुनिकीकरण किया और परिणास्वरूप हमने हरित क्रांति देखी । इसी प्रकार दुग्ध उत्पादन के प्रयास में सफेद क्रांति आदि। हमारे देश का अनुभव बतात है कि राष्ट्रीय जीवन के कई क्षेत्रों में आधुनिकता ने हमें आन्दोलन और क्रांति से रूबरू किया है।
8. **आधुनिकता तथा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूपान्तरण** – समाज में जब आधुनिकता आती है तो उसके साथ प्रौद्योगिकी, पूंजीवाद और प्रजातंत्र भी आते हैं। ये प्रक्रियाएं बहुत शक्तिशाली होती है, परिणामस्वरूप समाज में कई परिवर्तन आते हैं। कभी–कभी परम्परा और आधुनिकता के अनुकूल में विलम्ब हो जाते हैं, समाज में एक प्रकार की रूकावट आ जाती है जैसे पुरानी चीजें छोड़ नहीं पाते और नई चीजों को गले नहीं लगा पाते। लेकिन

इस तरह का ब्रेक–डाउन लम्बे समय तक नहीं चलता और परम्परा तथा आधुनिकता में अनुकूलन हो जाता है। इस तरह अनुकूलन और तालमेल की कठिनाइयों के होते हुए भी आधुनिकीकरण में अनुकूलन की सहवर्धी क्षमता होती है। समाज के रथ पहिये आगे बढ़ते रहते हैं। योगेन्द्र सिंह तो आधुनिकता में निहित परिवर्तन के मूल्यों से भली प्रकार सहमत हैं। वे कहते हैं कि हमारे यहां परिवर्तन की प्रक्रिया के चलते हुए स्वयं परम्पराओं का आधुनिकीकरण हो जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिकता आज के समय में प्रभावशाली तो है लेकिन फिर भी भारतीय समाज का जो देशी आधार है उसे बदल नहीं पाई। इस विचारधारा के समर्थकों में मिल्टन सिंगर और बरनार्ड कोहन हैं। दूसरी विचाधारा में मैकिम मैरियट जैसे मानवशास्त्रियों की है जिनका कहना है कि आधुनिकता का परम्परा का मुकाबला दो स्तरों से है : महान परम्परा यानी अखिल भारतीय स्तर और स्थानीय परम्परा अर्थात् लघु परम्परा। इन दोनों परम्पराओं पर आधुनिकता का प्रभाव पड़ता है। एक तीसरी विचाधारा योगेन्द्र सिंह की है। वे कहते है कि आधुनिकीकरण प्रक्रिया भारत में एक प्रभावशाली प्रक्रिया है। वैश्वीकरण ने इस प्रक्रिया को और अधिक ताकतवर बना दिया है। ऐसी स्थिति में परम्पराओं के सामने केवल दो विकल्प है। एक विकल्प तो यह है कि परम्परा कमजोर जो जाये, उसकी सांस फूल जाये और लम्बी अवधि में चलकर अपना दम तोड़ दे। दूसरा विकल्प यह है कि वह अपने आप को आधुनिकीकरण के मूल्यों में बांध दे। संघ का स्थान व्यक्तिवाद ने ले लिया है। प्रदत्त प्रस्थिति का स्थान अर्जित प्रस्थिति ले रही है और इस प्रकार परम्पराओं का आधुनिकीकरण हो पायेगा। परम्परा और आधुनिकीकरण की इस लेन–देन में संरचना के कई स्तरों पर संघर्ष भी आ जायेगा। आर–पार की लड़ाई दोनों में नहीं हो सकती समझौता दोनों को करना पड़ेगा। इस प्रकार भारतीय समाज की परम्पराओं के साथ आधुनिकता घुल मिल गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आईजेनस्टॉड, एस.एन. ; मॉडर्नाईजेशन : प्रोटेस्ट एण्ड चेन्ज, प्रिन्टिस–हॉल, ऑफ इण्डिया, न्यू देहली, 1969.
2. गौरे, एम.एस. ; एज्युकेशन एण्ड मॉडर्नाईजेशन इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1982,
3. एलाटस, सैयद हुसैन ; मॉडर्नाईजेशन एण्ड सोशल चेन्ज, अंगस एण्ड रॉबर्टशन, क्रिमोरेने, सिडनी, आस्ट्रेलिया, 1972,
4. ड्यूच, कार्ल, डब्ल्यू ; सोशल मॉबीलाईजेशन एण्ड पॉलिटिकल डवलपमेन्ट, अमेरिकन पॉलिटिकल साइन्स रिव्यू, सितम्बर 1961,
5. दीपांकर गुप्ता : मिस्टेकन मॉडर्निटी, हरपर कॉलिन्स, न्यू देहली 2000.
6. दोशी एस.एल. : आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 2005
7. पाई, ए.ई. ; टुवर्ड्स ए कम्यूनिकेशन थ्योरी ऑफ मॉडर्नाईजेशन, ओरियंट लौंग मैन, बॉम्बे, 1969,
8. जेम्स, ओ कॉनल, ; कन्सेप्ट ऑफ मॉडर्नाईजेशन, साऊथ एटलांटिक क्वार्टर्ली, 1965,
9. सिंह, योगेन्द्र ; एसेज ऑन मॉडर्नाईजेशन इन इण्डिया, मनोहर बुक सर्विस, नई दिल्ली, 1978,
10. सिंह, योगेन्द्र ; मॉडर्नाईजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 1994.
11. सिंह, योगेन्द्र ; क्ल्चर चेंच इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 2000
12. दुबे, एस.सी. ; मॉडर्नाईजेशन एण्ड एज्यूकेशन, विस्तार पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988,
13. श्रीनिवास, एम.एन. ; सोशल चेन्ज इन मॉडर्न इण्डिया, ऑरियन्ट लोंगमेन लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977,
14. लर्नर, डेनियल ; दी पासिंग ॲवे ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी, फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, 1958,
15. जिन्सबर्ग ; सोश्योलॉजी, थोर्नटन बटरवर्थ, लन्दन, 1937,
16. हॉबहाउस ; सोशल डवलपमेन्ट, हेनरी हॉल्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयॉर्क, 1966,

17. हटिंगटन, सैमुअल, पी. ; दी चेन्ज टु चेन्ज : मॉडर्नाईजेशन, डवलपमेन्ट एण्ड पॉलटिक्स, इन सिरील ई. ब्लेक (ईडी), कम्पेरेटिव मॉडर्नाईजेशन, आईबीआईडी,
18. शिल्स, एडवर्ड ; ट्रेडिशन एण्ड लिबर्टी इन एथिक, फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, 1965,
19. मुकर्जी, डी. पी. ; डाइवर्सिटी, पीपल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1958,
20. सिंगर, मिल्टन ; दी ग्रेट ट्रेडिशन इन ए मैट्रोपॉलिटियन सेन्टर, ट्रेडिशनल इण्डिया, सेन्टर मद्रास, 1964,
21. सिंह, योगेन्द्र ; भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण (हिन्दी अनुवाद, ए.के. अग्रवाल), रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2006,
22. मरियन, जे, लेवी ; मॉडनाईजेशन इन दी स्ट्रेक्चर ऑफ सोसायटी, प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस, न्यूजर्सी, 1966,